श्रीमद् आचार्य नेमिचन्द्र
सिद्धान्तचक्रवर्ति विरचित

लब्धिसार

प्रथमोपशम सम्यक्त्व अधिकार

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण

सिद्धे जिणिंदचंदे, आयरिय-उवज्झाय-साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥1॥

ताए अधापवत्तद्धाए संखेज्जभागमेत्तं तु ।
अणुकट्टीए अद्धा, णिव्वग्गणकंडयं तं तु ॥43॥

- अन्वयार्थः- (ताए अधापवत्तद्धाए) उस अधःप्रवृत्तकरण काल का (संखेनभागमेत्तं तु) संख्यातवाँ भाग मात्र (अणुकट्टीए अदा) अनुकृष्टि का आयाम है । (तं तु णिव्वग्गणकंडयं) वही निर्वर्गणाकाण्डक का प्रमाण है ॥43॥

अनुकृष्टि

अनुकृष्टि याने प्रत्येक समय के परिणाम-खंड।

अनुकृष्टि गच्छ/आयाम

एक समय के परिणामों के नाना खंडों की संख्या है।

अध:प्रवृत्त करण काल/ संख्यात

39	40	41	42
1-39	40-79	80-120	121-162

1 समय के परिणामों की संख्या 162

निर्वर्गणाकाण्डक

अनुकृष्टि खंडों की संख्या या अनुकृष्टि गच्छ वही निर्वर्गणाकाण्डक का प्रमाण है।

वर्गणा अर्थात् समयों की समानता,

निर् याने उससे रहित ऊपर-ऊपर के समयों के परिणाम-खंड,

उनका कांडक अर्थात् पर्व उसको निर्वर्गणाकांडक कहते हैं।

वे अधःप्रवृत्तकरण काल में संख्यात हजार होते हैं ।

अनुकृष्टि रचना

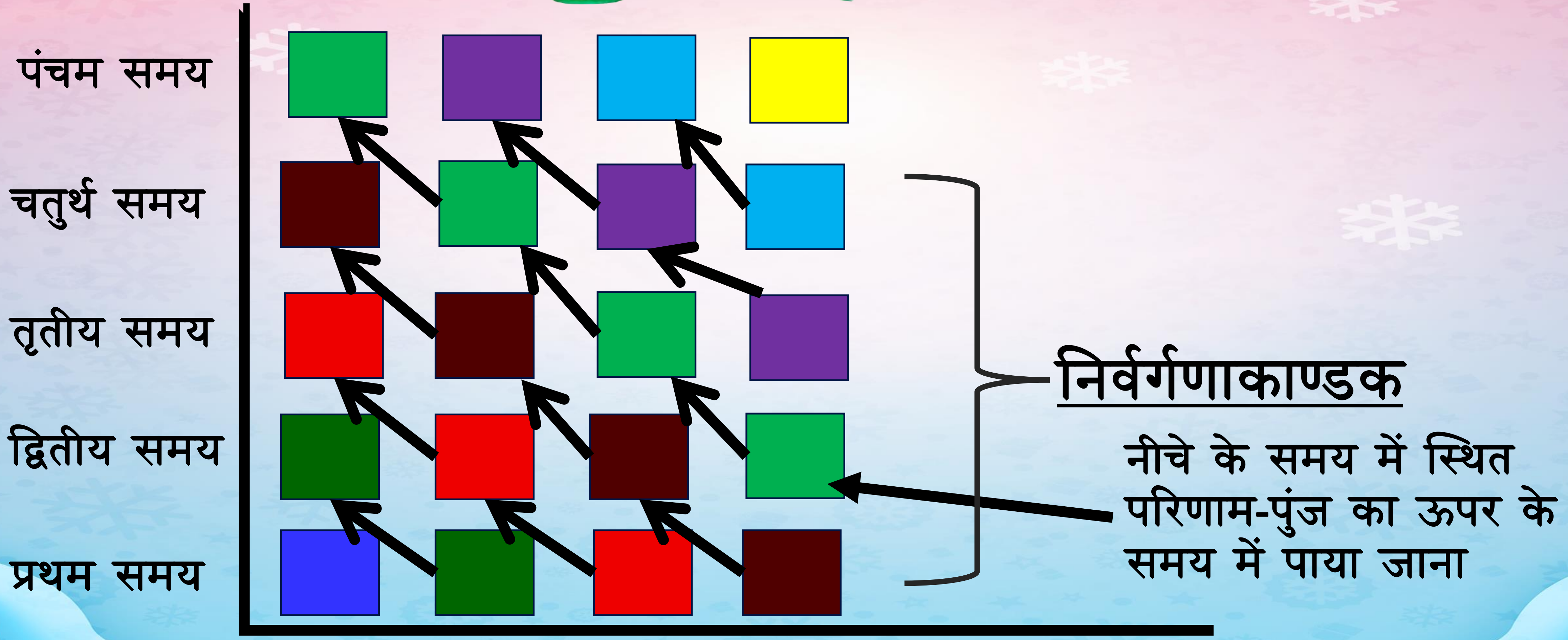

काल - अंतर्मुहूर्त

पडिसमयगपरिणामा, णिव्वग्गणसमयमेत्तखंडकया।
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो ॥44॥

- अन्वयार्थ:- (पडिसमयगपरिणामा) प्रत्येक समय के परिणामों के (णिव्वग्गणसमयमेत्तखंडकया) निर्वर्गणा काण्डक के जितने क्रमशः खंड होते हैं (अहियकमा हु) वे खण्ड अधिक क्रम वाले हैं । (विसेसे पडिभागो मुहुत्तअंतो हु) अधिक प्रमाण लाने के लिए प्रतिभागहार अंतर्मुहूर्त है ॥44॥

चय का प्रमाण

प्रत्येक समय के परिणामों के निर्वर्गणा समयप्रमाण खंड किए अर्थात् अध:प्रवृत्तकरण काल के संख्यातवें भागप्रमाण खंड किए।

वे संख्यात आवलि के जितने समय हैं उतने प्रमाण ही हैं।

जघन्य खंड से उत्कृष्ट खंड पर्यन्त परिणाम एक-एक चय से अधिक हैं।

विशेष (चय) का प्रमाण = प्रथम खण्ड/अंतर्मुहूर्त

पडिखंडगपरिणामा, पत्तेयमसंखलोगमेत्ता हु ।
लोयाणमसंखेज्जा, छट्ठाणाणिवि विसेसे वि ॥45॥

- अन्वयार्थः- (पडिखंडगपरिणामा) प्रतिनियत खंड के परिणाम (पत्तेयं) प्रत्येक खण्ड में (असंखलोगमेत्ता हु) असंख्यात लोकप्रमाण हैं। (छट्ठाणाणि वि) प्रत्येक खंड में षट्स्थानपतित वृद्धि-स्थान भी (लोयाणमसंखेज्जा) असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं । (विसेसे वि) अनुकृष्टि चय में भी असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थान होते हैं अर्थात् चय का प्रमाण इतना बड़ा होता है ।

प्रत्येक खंड के परिणाम की विशेषता

जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट भेदों से भिन्न प्रतिनियत खंड के विशुद्ध परिणामों के भेद एक-एक खंड में असंख्यात लोकप्रमाण हैं।

प्रत्येक समय के परिणाम उत्तरोत्तर सदृश वृद्धि को लिए हुए विशेष अधिक हैं।

प्रत्येक खंड के परिणामों में असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान होते हैं।

अनुकृष्टि विशेष में भी असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान होते हैं।

अधःकरण काल के परिणामों की अनुकृष्टि रचना

समय	परिणामों का प्रमाण	प्रथम खंड	द्वितीय खंड	तृतीय खंड	चतुर्थ खंड	निर्वर्गणाकांडक
८	१९०	४६	४७	४८	४९	द्वितीय
७	१८६	४५	४६	४७	४८	
६	१८२	४४	४५	४६	४७	
५	१७८	४३	४४	४५	४६	
४	१७४	४२	४३	४४	४५	प्रथम
३	१७०	४१	४२	४३	४४	
२	१६६	४०	४१	४२	४३	
१	१६२	३९	४०	४१	४२	

अधःकरण काल के परिणामों की अनुकृष्टि रचना

समय	परिणामों का प्रमाण	प्रथम खंड	द्वितीय खंड	तृतीय खंड	चतुर्थ खंड	निर्वर्गणाकांडक
१६	२२२	५४	५५	५६	५७	चतुर्थ
१५	२१८	५३	५४	५५	५६	
१४	२१४	५२	५३	५४	५६	
१३	२१०	५१	५२	५३	५४	
१२	२०६	५०	५१	५२	५३	तृतीय
११	२०२	४९	५०	५१	५२	
१०	१९८	४८	४९	५०	५१	
९	१९४	४७	४८	४९	५०	

पढमे चरिमे समये, पढमं चरिमं च खंडमसरित्थं ।
सेसा सरिसा सव्वे, अट्ठुव्वंकादिअंतगया ॥46॥

- अन्वयार्थ :- (पढमे समये) प्रथम समय का (पढमं खंड) प्रथम खंड (च) और (चरिमे समये) अंतिम समय का (चरिमं खंड) अंतिम खंड (असरित्थं) असमान है अर्थात् दूसरे किसी भी खंड के समान नहीं है । (सेसा सव्वे) शेष सर्व खंड (सरिसा) एक दूसरे से सदृश हैं (अट्ठुव्वंकादिअंतगया) सभी खण्डों का आदि अष्टांक और अन्त उर्वक है ॥46॥

www.JainKosh.org

अध:प्रवृत्तकरण काल के प्रथम समय का प्रथम खंड ३९ और अंतिम समय का अंतिम खंड ५७ ऊपर व नीचे समयवर्ती खंडों के असमान ही है।

शेष द्वितीय खंड से द्विचरमखंड पर्यंत सभी खंड ऊपर और नीचे के समयवर्ती खंडों के बराबर (यथायोग्य समान) हैं।

अर्थात् प्रत्येक खण्ड में प्रथम परिणाम पूर्व परिणाम की अपेक्षा अनन्तगुणवृद्धिरूप है और अंतिम परिणाम पूर्व परिणाम अपेक्षा अनन्तभागवृद्धिरूप है। अनन्तगुणवृद्धि को अष्टांक और अनन्तभागवृद्धि को उर्वंक कहते हैं।

चरिमे सव्वे खंडा, दुचरिमसमओ त्ति अवरखंडाए ।
असरिसखंडाणोली, अधापवत्तम्हि करणम्हि ॥47॥

- अन्वयार्थः- (अधापवत्तम्हि करणम्हि) अधःप्रवृत्तकरण में (चरिमे) अंतिम समय संबंधी (सव्वे खंडा) सभी खंड और (दुचरिमसमओ त्ति) द्विचरम समयपर्यंत के (अवरखंडाए) सर्व जघन्य खण्ड (असरिसखंडाणोली) यह असमान खंडों की पंक्ति है ॥47॥

www.JainKosh.org

परिणाम-खण्डों की अंकुशाकार रचना

५४	५५	५६	५७
५३			
५२			
५१			
५०			
४९			
४८			
४७			
४६			
४५			
४४			
४३			
४२			
४१			
४०			
३९			

अध:प्रवृत्तकरण के प्रथम समय से लेकर उपान्त्य समय तक के सब प्रथम खण्डों का अपने से ऊपर के समयों के अन्य किसी खण्डों के साथ सादृश्य नहीं है।

इसी प्रकार अन्तिम समय के सब परिणाम-खण्ड भी उनसे ऊपर अन्य परिणाम-खण्डों का अभाव होने से विसदृश ही हैं।

अध:प्रवृत्तकरण के ३०७२ परिणामों में से उक्त ९१२ परिणाम अपुनरुक्त है। शेष सब परिणाम पुनरुक्त हैं ।

पढमे करणे अवरा, णिव्वग्गणसमयमेत्तगा तत्तो ।
अहिगदिणा वरमवरं, तो वरपंती अणंतगुणियकमा ॥48॥

- अन्वयार्थ:- (पढमे करणे) प्रथम अध:प्रवृत्तकरण में (णिव्वग्गणसमयमेत्तगा) निर्वर्गणाकाण्डक समयप्रमाण प्रत्येक समय के (अवरा) जघन्य परिणाम (अणंतगुणियकमा) ऊपर-ऊपर अनंतगुणित क्रम से हैं (तत्तो) उससे (निर्वर्गणाकाण्डक के अंतिम समय संबंधी जघन्य परिणाम से) (वरमवरं) प्रथम समयसंबंधी उत्कृष्ट परिणाम, उससे द्वितीय निर्वर्गणाकाण्डक के प्रथम समयसंबंधी जघन्य परिणाम इस प्रकार (अहिगतिना) सर्प की चाल के समान जघन्य से उत्कृष्ट और उससे जघन्य परिणाम अनन्तगुणित क्रम से हैं । (तो) उससे (चरम निर्वर्गणाकाण्डक के प्रथम समय के उत्कृष्ट परिणाम से उसके अंतिम समय पर्यन्त (वरपंती) उत्कृष्ट परिणामों की पंक्ति (अणंतगुणियकमा) अनन्तगुणित क्रम से है।

www.JainKosh.org

अल्पबहुत्व

स्वस्थान

परस्थान

स्वस्थान अल्पबहुत्व

अध:प्रवृत्तकरण काल में निर्वर्गणाकांडक समय मात्र प्रत्येक समय में प्रथम खंडों के जघन्य परिणाम ऊपर-ऊपर क्रम से अनन्तगुणित होते जाते हैं।

उसके पश्चात् प्रथम निर्वर्गणाकाण्डक के अंतिम समयसंबंधी प्रथमखंड के जघन्य परिणाम से प्रथम समयसंबंधी अंतिमखंड का उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा (विशुद्ध) है।

उससे दूसरे कांडक के प्रथम समयसंबंधी प्रथमखंड का जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है।

उससे प्रथम कांडक के दूसरे समय संबंधी अंतिम खंड का उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है।

उससे दूसरे कांडक के दूसरे समय संबंधी प्रथम खंड का जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है।

इसप्रकार जघन्य से उत्कृष्ट अनन्तगुणित और उत्कृष्ट से जघन्य अनन्तगुणित है।

सर्व जघन्य विशुद्धि के भी अविभागप्रतिच्छेद जीवराशि से अनन्तगुणे हैं।

अध:करण काल के परिणामों की अनुकृष्टि रचना

समय क्र.	परिणामों का	प्रथम खंड	द्वितीय खंड	तृतीय खंड	चतुर्थ खंड
८	१९०	४६ २९५ – ३४०	४७ ३४१ – ३८७	४८ ३८८ – ४३५	४९ ४३६ – ४८४
७	१८६	४५ २५० – २९४	४६ २९५ – ३४०	४७ ३४१ – ३८७	४८ ३८८ – ४३५
६	१८२	४४ २०६ – २४९	४५ २५० – २९४	४६ २९५ – ३४०	४७ ३४१ – ३८७
५	१७८	४३ १६३ – २०५	४४ २०६ – २४९	४५ २५० – २९४	४६ २९५ – ३४०
४	१७४	४२ १२१ – १६२	४३ १६३ – २०५	४४ २०६ – २४९	४५ २५० – २९४
३	१७०	४१ ८० – १२०	४२ १२१ – १६२	४३ १६३ – २०५	४४ २०६ – २४९
२	१६६	४० ४० – ७९	४१ ८० – १२०	४२ १२१ – १६२	४३ १६३ – २०५
१	१६२	३९ १ – ३९	४० ४० – ७९	४१ ८० – १२०	४२ १२१ – १६२

अध:करण काल के परिणामों की अनुकृष्टि रचना

समय क्र.	परिणामों का	प्रथम खंड	द्वितीय खंड	तृतीय खंड	चतुर्थ खंड
१६	प्रमाण २२२	५४ ६९१ – ७४४	५५ ७४५ – ७९९	५६ ८00 – ८८५	५७ ८५६ – ९१२
१५	२१८	५३ ६३८ – ६९0	५४ ६९१ – ७४४	५५ ७४५ – ७९९	५६ ८00 – ८८५
१४	२१४	५२ ५८६ – ६३७	५३ ६३८ – ६९0	५४ ६९१ – ७४४	५५ ७४५ – ७९९
१३	२१०	५१ ५३५ – ५८५	५२ ५८६ – ६३७	५३ ६३८ – ६९0	५४ ६९१ – ७४४
१२	२०६	५0 ४८५ – ५३४	५१ ५३५ – ५८५	५२ ५८६ – ६३७	५३ ६३८ – ६९0
११	२०२	४९ ४३६ – ४८४	५0 ४८५ – ५३४	५१ ५३५ – ५८५	५२ ५८६ – ६३७
१०	१९८	४८ ३८८ – ४३५	४९ ४३६ – ४८४	५0 ४८५ – ५३४	५१ ५३५ – ५८५
९	१९४	४७ ३४१ – ३८७	४८ ३८८ – ४३५	४९ ४३६ – ४८४	५0 ४८५ – ५३४

www.JainKosh.org

4	174	42	43	44	45
		(121-162)	(163-205)	(206-249)	(246-294)
3	170	41	42	43	44
		(80-120)	(121-162)	(163-205)	(206-249)
2	166	40	41	42	43
		(40-79)	(80-120)	(121-162)	(163-205)
1	162	39	40	41	42
		(1-39)	(40-79)	(80-120)	(121-162)
समय	परिणामों की संख्या	अनुकृष्टि के खंड			

www.JainKosh.org

परस्थान-अल्पबहुत्व

प्रथम निर्वर्गणाकाण्डक के अंतिम समय तक एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे आदि समयों में जो जघन्य परिणाम प्राप्त होता है वह उत्तरोत्तर अनन्तगुणी विशुद्धि को लिए हुए होता है।

अंकसंदृष्टि के अनुसार पहले समय का 1 संख्यांक जघन्य परिणाम अध:प्रवृत्तकरण के अन्य सब परिणामों की अपेक्षा सबसे स्तोक विशुद्धि को लिए हुए होता है ।

पहले समय के दूसरे खण्ड का 40 संख्यांक जो जघन्य परिणाम है वही दूसरे समय के प्रथम खण्ड का 40 संख्याक जघन्य परिणाम है इसलिए यह प्रथम खण्ड के 1 संख्यांक जघन्य परिणाम से अनन्तगुणी विशुद्धि को लिए हुए होता है।

प्रथम समय के तीसरे खण्ड का 80 संख्यांक जो जघन्य परिणाम है वही तीसरे समय के प्रथम खण्ड का 80 संख्यांक जो जघन्य परिणाम है, इसलिए यह भी दूसरे समय के 40 संख्यांक जघन्य परिणाम से अनन्तगुणी विशुद्धि को लिए हुए होता है।

इसीप्रकार प्रथम समय के चौथे खण्ड का 121 संख्यांक जो जघन्य परिणाम है, चौथे समय के प्रथमखण्ड का 121 संख्यांक जघन्य परिणाम है, इसलिए यह भी तीसरे समय के 80 संख्यांक जघन्य परिणाम से अनन्तगुणी विशुद्धि को लिए हुए होता है।

इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त प्रमाण प्रथम निर्वर्गणाकाण्डक के अंतिम समय तक जघन्य विशुद्धि के अल्पबहूत्व का यह क्रम जानना चाहिए।

आगे उक्त जघन्य परिणाम से प्रथम समय का उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा होता है ।

अंकसंदृष्टि की अपेक्षा वह जघन्य विशुद्धि प्रथम समय के अन्तिम खण्ड के 121 संख्यांक परिणाम की थी और यह उससे अनन्तगुणी बतलाई है।

इस प्रथम समय की उत्कृष्ट विशुद्धि से द्वितीय निर्वर्गणाकाण्डक के प्रथम समय की जघन्य विशुद्धि अनन्तगुणी होती है।

अंकसंदृष्टि की अपेक्षा प्रथम समय सम्बन्धी अंतिम खण्ड के 162 संख्यांक परिणाम की उत्कृष्ट विशुद्धि से पाँचवे समय सम्बन्धी प्रथम खण्ड के 163 संख्यांक परिणाम की जघन्य विशुद्धि अनन्तगुणी है,

इससे अध:प्रवृत्तकरण के द्वितीय समय सम्बन्धी अंतिम खण्ड की उत्कृष्ट विशुद्धि अनन्तगुणी है, ।

अंकसंदृष्टि की अपेक्षा द्वितीयसमय के अंतिम खण्ड की यह यह उत्कृष्ट विशुद्धि 205 संख्यांक परिणामस्वरूप है, इसलिए यह उससे अनन्तगुणी है।

विशुद्धि का अल्पबहुत्व

ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज
१	४०	८०	१२१	१८३	२०६	२५०	२९५	३४१	३८८	४३६	४८५	५३५	५८६	६३८	६९१
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

अहिगति

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१६२	२०५	२४९	२९४	३४ ०	३८७	४३ ५	४८ ४	५३४	५८५	६३७	६९०	७४४	७९९	८५५	९१२
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ

विशुद्धि का अल्पबहुत्व

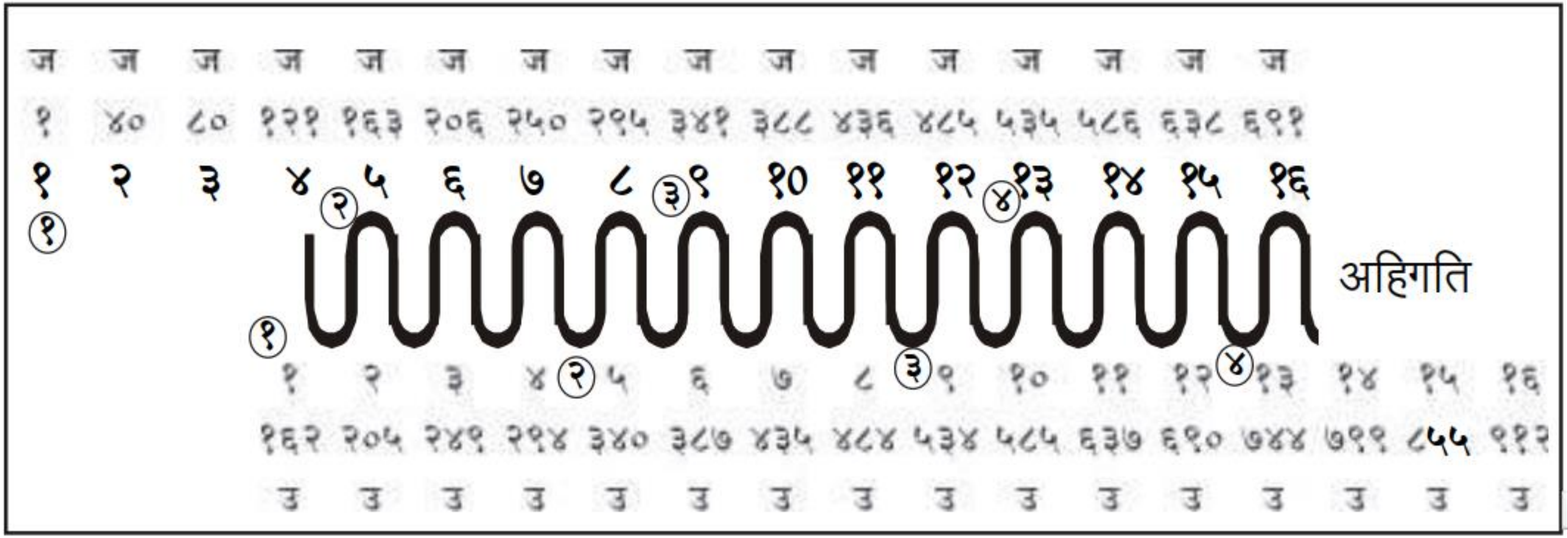

www.JainKosh.org

पढमे करणे पढमा, उड्ढगसेढी य चरिमसमयस्स ।
तिरियगखंडाणोली, असरित्थाणंतगुणियकमा ॥49॥

- अन्वयार्थः- (पढमे करणे) प्रथम अधःप्रवृत्तकरण में (पढमा उड्ढसेढी) प्रथम ऊर्ध्वपंक्ति (सब समयों के प्रथम खंड की ऊर्ध्व पंक्ति) (य) और (चरिमसमयस्स) अंतिम समय की (तिरियगखंडाणोली) तिर्यक्रूप से स्थित खंडों की पंक्ति (असरित्था) असमान है और (अणंतगुणियकमा) अनन्तगुणितरूप से स्थित है ।

www.JainKosh.org

पढमं व विदियकरणं, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो ॥50॥

- अन्वयार्थ :- (पढमं व) प्रथम अधःप्रवृत्तकरण के समान ही (विदियकरणं) दूसरा अपूर्वकरण है। यहाँ भी (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (अहियकमा) क्रम से अधिक (असंखलोग परिणामा) असंख्यात लोकप्रमाण परिणाम हैं (हु विसेसे) चय का प्रमाण लाने के लिए (मुहुत्तअंतो हु) अंतर्मुहूर्त (पडिभागो) प्रतिभागहार है ।

असंख्यात लोकमात्र अध:प्रवृत्तकरण परिणामों की अपेक्षा अपूर्वकरण परिणाम असंख्यात लोकगुणित हैं।

वे परिणाम अपूर्वकरण के अंतिम समय के परिणाम प्राप्त होने तक प्रत्येक समय में एक-एक विशेष (चय) अधिक होते जाते हैं।

अर्थात् अपूर्वकरण के प्रथम समय से अंतिम समय पर्यन्त प्रत्येक समय में परिणाम एक-एक चय से अधिक हैं।

चय लाने के लिए आदिधन का अन्तर्मुहूर्तमात्र प्रतिभागहार है ।

जम्हा उवरिमभावा, हेट्ठिमभावेहिं णत्थि सरिसत्तं ।
तम्हा विदियं करणं, अपुव्वकरणो त्ति णिद्दिट्ठं ॥51॥

- अन्वयार्थः-(जम्हा) जिस कारण (उवरिमभावा) ऊपर समयवर्ती परिणामों की (हेट्ठिमभावेहिं) नीचे के समयवर्ती परिणामों से (सरिसत्तं) समानता (णत्थि) नहीं है (तम्हा) उस कारण से (विदियं करणं) दूसरे करण को (अपुव्वकरणो त्ति) अपूर्वकरण ऐसा (णिद्दिट्ठं) कहा गया है। ॥51॥

स्वरूप - अपूर्वकरण

भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम

भिन्न ही

एक समयवर्ती जीवों के परिणाम

भिन्न भी

समान भी

अपूर्वकरण के परिणाम

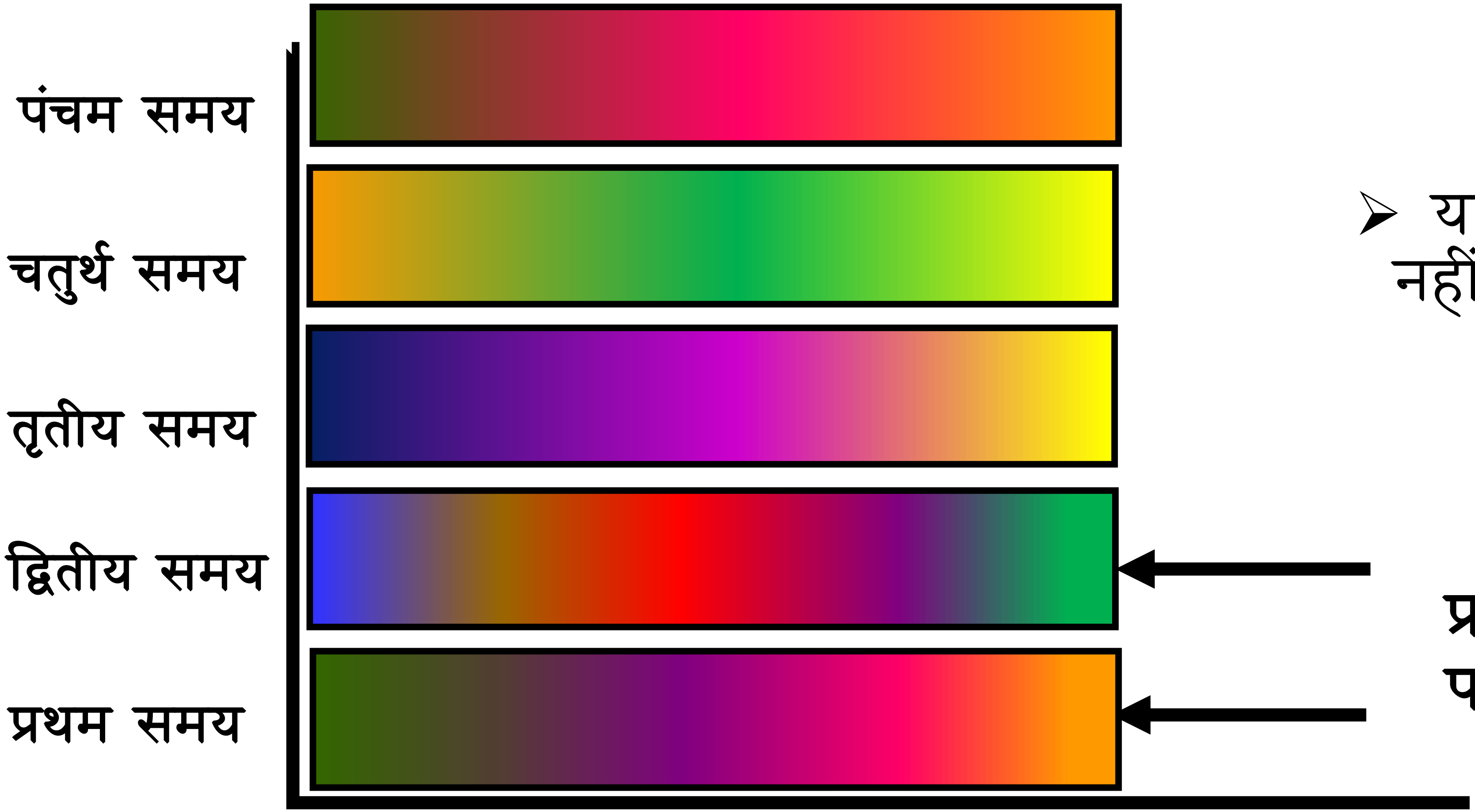

➢ यहाँ अनुकृष्टि रचना नहीं है ।

प्रतिसमय अपूर्व-अपूर्व परिणाम

काल - अंतर्मुहूर्त

असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

www.JainKosh.org

सर्वधन = 4096, गच्छ = 8, संख्यात = 4

पद	सूत्र	उदाहरण
चय	$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 \times \text{संख्यात}}$	$\frac{4096}{8 \times 8 \times 4} = 16$
चयधन	$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}$	$\frac{8 - 1}{2} \times 16 \times 8$ $= 7 \times 8 \times 8 = 448$
आदिधन	सर्वधन – चयधन	4096 – 448 = 3648
आदि	$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}}$	$\frac{3648}{8} = 456$

समय	परिणामों की संख्या
8	568 (3529-4096)
7	552 (2977-3528)
6	536 (2441-2976)
5	520 (1921-2440)
4	504 (1417-1920)
3	488 (929-1416)
2	472 (457-928)
1	456 (1-456)

कुल परिणाम = 4096

समय = 8

चय = 16

विदियकरणादिसमयादंतिमसमओत्ति अवरवरसुद्धी ।
अहिगदिणा खलु सव्वे, होंति अणंतेण गुणियकमा ॥52॥

- अन्वयार्थ:- (विदियकरणादिसमयाद) दूसरे करण के अर्थात् अपूर्वकरण के प्रथम समय से (अंतिमसमओत्ति) अंतिम समय पर्यन्त (अवरवर सुद्धी) जघन्य व उत्कृष्ट विशुद्धि (खलु) निश्चय से (अहिगदिणा) सर्प की चाल से (सव्वे) सब (अणंतेण गुणियकमा) अनन्तगुणित क्रम से (होंति) होती हैं ।

अपूर्वकरण में विशुद्धि

अपूर्वकरण के प्रथम समय के जघन्य परिणाम की विशुद्धि की अपेक्षा उत्कृष्ट परिणाम की विशुद्धि असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थानों को उल्लंघन कर अनन्तगुणी है।

उससे ऊपर के समय का जघन्य विशुद्धि परिणाम असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थानपतित विशुद्धि की वृद्धि होने अनन्तगुणा है।

उससे उस ही समय का उत्कृष्ट विशुद्धि परिणाम अनन्तगुणा है।

इस प्रकार सर्व जघन्य, उत्कृष्ट विशुद्धि परिणाम अनंतगुणित क्रम से सर्प की चाल से तब तक जाते हैं कि जब तक अंतिम समय के जघन्य और उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त नहीं होते।

यहाँ अनुकृष्टि खंडों के भेद नहीं है क्योंकि निचले समय के सबसे उत्कृष्ट परिणाम से ऊपर के समय के जघन्य परिणाम की विशुद्धि भी अनंतगुणी है।

अहिगति

जघन्य परिणाम	१	४५७	९२९	१४१७	१९२१	२४४१	२९७७	३५२९
अहिगति								
उत्कृष्ट परिणाम	४५६	९२८	१४१६	१९२०	२४४०	२९७६	३५२८	४०९६

गुणसेढीगुणसंकम-ठिदिरसखंडा अपुव्वकरणादो ।
गुणसंकमेण सम्मामिस्साणं पूरणो त्ति हवे ॥53॥

- अन्वयार्थ:- (अपुव्वकरणादो) अपूर्वकरण से (गुणसंकमेण सम्मामिस्साणं पूरणो त्ति) गुणसंक्रमण द्वारा सम्यक्त्व और मिश्र के पूरण काल पर्यन्त (गुणसेढीगुणसंकमठिदिरसखंडा) गुणश्रेणि, गुणसंक्रमण, स्थितिकांडकघात और अनुभागकांडक घात (हवे) होते हैं ।

www.JainKosh.org

अपूर्वकरण के 4 आवश्यक

गुणश्रेणी निर्जरा	गुण-संक्रमण	स्थिति-कांडक घात	अनुभाग-कांडक घात

ये सब कार्य सत्ता में स्थित कर्मों में होते हैं।

ये चार आवश्यक कब तक होते हैं?

प्रारंभ

- अपूर्वकरण के प्रथम समय से

अंत

- गुणसंक्रमण द्वारा सम्यक्त्व और मिश्र के पूरण काल पर्यन्त

मिथ्यात्व की गुणश्रेणी

मिथ्यात्व का अन्तरकरण करने के बाद उसकी प्रथम स्थिति आवलि और प्रत्यावलि अर्थात् दो आवलि प्रमाण शेष रहने पर उसका गुणश्रेणीरूप द्रव्य का निक्षेप नहीं होता,

क्योंकि आवलि और प्रत्यावलिप्रमाण प्रथम स्थिति के शेष रहने के एक समय पूर्व ही आगाल और प्रत्यागाल का होना बन्द हो जाता है।

मिथ्यात्व के शेष आवश्यक

शेष रहे तीन आवश्यक कार्य में से मिथ्यात्व के द्रव्य के स्थितिकाण्डक घात और अनुभागकाण्डकघात ये दो कार्य विशेष तो मिथ्यात्व की प्रथम स्थिति के अंतिम समय तक होते रहते हैं।

मिथ्यात्व के द्रव्य का गुणसंक्रम प्रथमोपशम सम्यक्त्व के होने पर प्रारंभ होता है और सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व के पूरण होने के अन्तर्मुहर्त काल तक होता रहता है।

यह मिथ्यात्व प्रकृति की अपेक्षा विचार है।

इतनी विशेषता है कि अनुभागकाण्डकघात अप्रशस्त कर्मों का ही होता है, क्योंकि विशुद्धि के कारण प्रशस्त कर्मों की अनुभागवृद्धि को छोड़कर उनके अनुभाग का घात नहीं हो सकता है।

ठिदिबंधोसरणं पुण, अधापवत्तादुपूरणो त्ति हवे ।
ठिदिबंधट्ठिदिखंडुक्कीरणकाला समा होंति ॥54 ॥

- अन्वयार्थ :- (ठिदिबंधोसरणं) स्थितिबंधापसरण (अधापवत्तादापूरणो त्ति) अधःप्रवृत्तकरण से लेकर सम्यक्त्व और मिश्र प्रकृति के पूरणकाल पर्यन्त (हवे) होता है । (ठिदिबंधट्ठिदिखंडुक्कीरणकाला) स्थितिबंधापसरण काल और स्थितिकांडकोत्कीरण काल (समा होंति) समान होते हैं ।

www.JainKosh.org

स्थितिबंधापसरण

करण परिणामों के कारण उत्तरोत्तर विशुद्धि में वृद्धि होने से अपूर्वकरण से लेकर जिस प्रकार एक-एक अन्तर्मुहर्त काल के भीतर एक-एक स्थितिकाण्डक का उत्कीरण नियम से होने लगता है, उसी प्रकार उत्तरोत्तर स्थितिबंध में भी अपसरण होता है।

इन दोनों का काल समान अन्तर्मुहर्त प्रमाण है।

उसमें भी प्रथम स्थितिकाण्डकघात और प्रथम स्थितिबंधापसरण में जितना काल लगता है उससे दूसरे आदि स्थितिकाण्डकघात और स्थितिबन्धापसरणों में उत्तरोत्तर विशेषहीन काल लगता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि स्थितिकाण्डकघात और स्थितिबंधापसरण एक साथ प्रारम्भ होते हैं और एक साथ समाप्त होते हैं।

स्थितिबंधापसरण कब तक होता है?

- स्थितिबंधापसरण अध:प्रवृत्तकरण के प्रथम समय से प्रारम्भ होकर गुणसंक्रमण द्वारा पूरणकाल के अंतिम समय पर्यंत प्रवृत्त होता है।

गुणसेढीदीहत्तमपुव्वदुगादो दु साहियं होदि ।
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेवो ॥55॥

- अन्वयार्थः- (गुणसेढीदीहत्त) गुणश्रेणि का दीर्घत्व अर्थात् गुणश्रेणि का आयाम (अपुव्वदुगादो दु) अपूर्वद्विक अर्थात् अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण काल से (साहियं) थोड़ा अधिक (होदि) होता है (गलिदवसेसे) उस गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम में (उदयावलिबाहिरदो दु) उदयावलि के बाहर (णिक्खेवो) निक्षेप होता है अर्थात् अपकृष्ट द्रव्य देता है ।

www.JainKosh.org

गुणश्रेणी निर्जरा

- गलितावशेष
  - उदयादि
  - उदयावली बाह्य
- अवस्थित
  - उदयादि
  - उदयावली बाह्य

गलितावशेष गुणश्रेणि

- जिसमें अधस्तन एक-एक निषेक के गलित होते जाने के कारण उत्तरोत्तर गुणश्रेणि-निक्षेप में एक-एक समय कम होता जाता है, उसकी गलितावशेष गुणश्रेणि-निक्षेप संज्ञा है ।

अवस्थित गुणश्रेणी

- जिसमें अधस्तन एक-एक निषेक के गलित होने पर ऊपर एक-एक निषेक की वृद्धि होती जाती है उसकी अवस्थित गुणश्रेणी संज्ञा है।

उदयादि गुणश्रेणी

- उदय समय से लेकर द्रव्य का निक्षेपण करने पर उदयादि गुणश्रेणी कही जाती है।

उदयावली बाह्य

- उदयावली के बाहर प्रथम निषेक से द्रव्य का निक्षेपण करने पर उदयावली बाह्य गुणश्रेणी कही जाती है ।

जो अनुदय प्रकृति है उसकी उदयावली बाह्य गुणश्रेणी ही होती है ।

उदयवाली प्रकृति की प्रसंग के अनुसार दोनों प्रकार की गुणश्रेणी होती है।

उदयावली बाह्य गुणश्रेणी

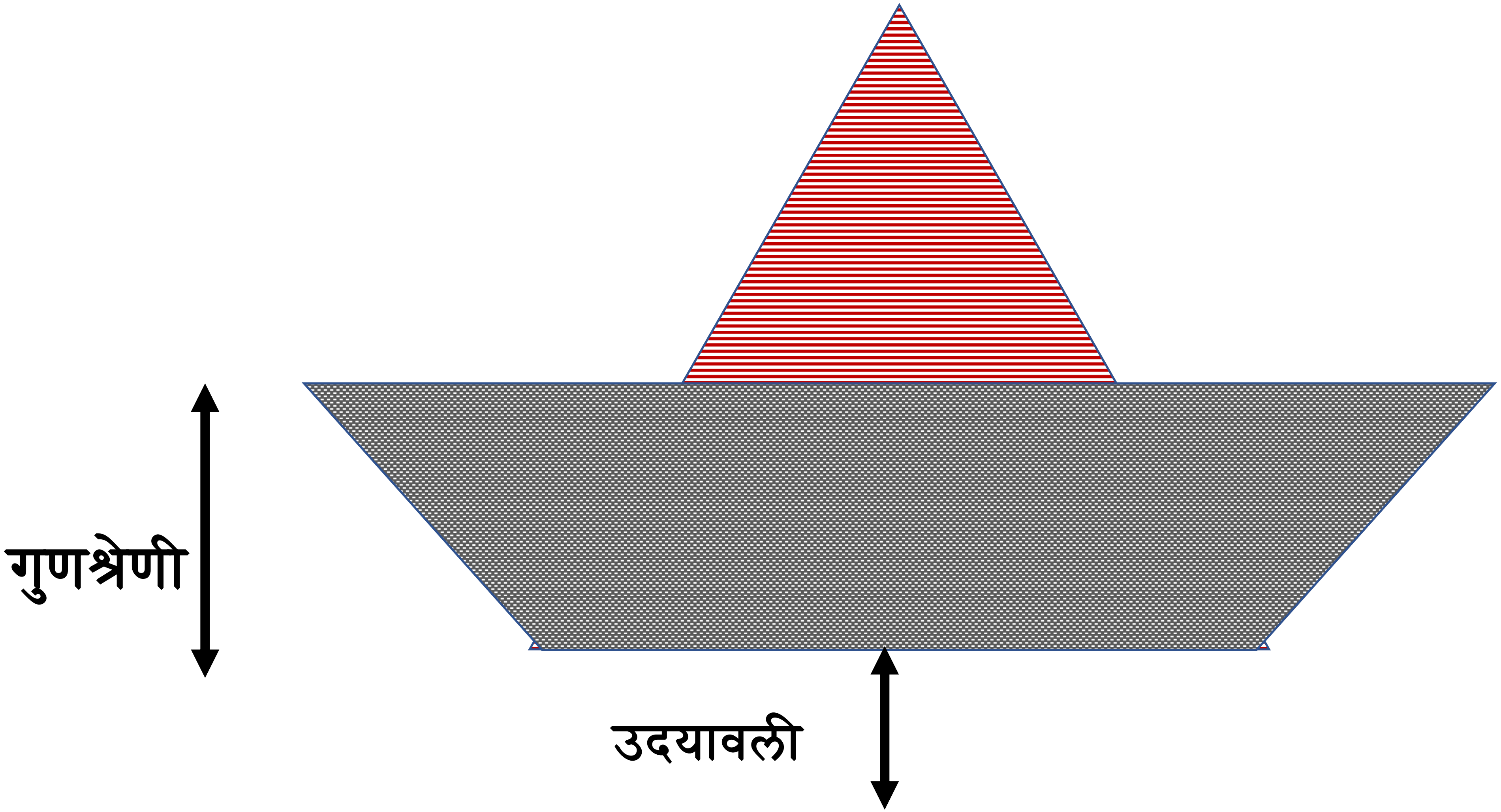

उदयादि गुणश्रेणी

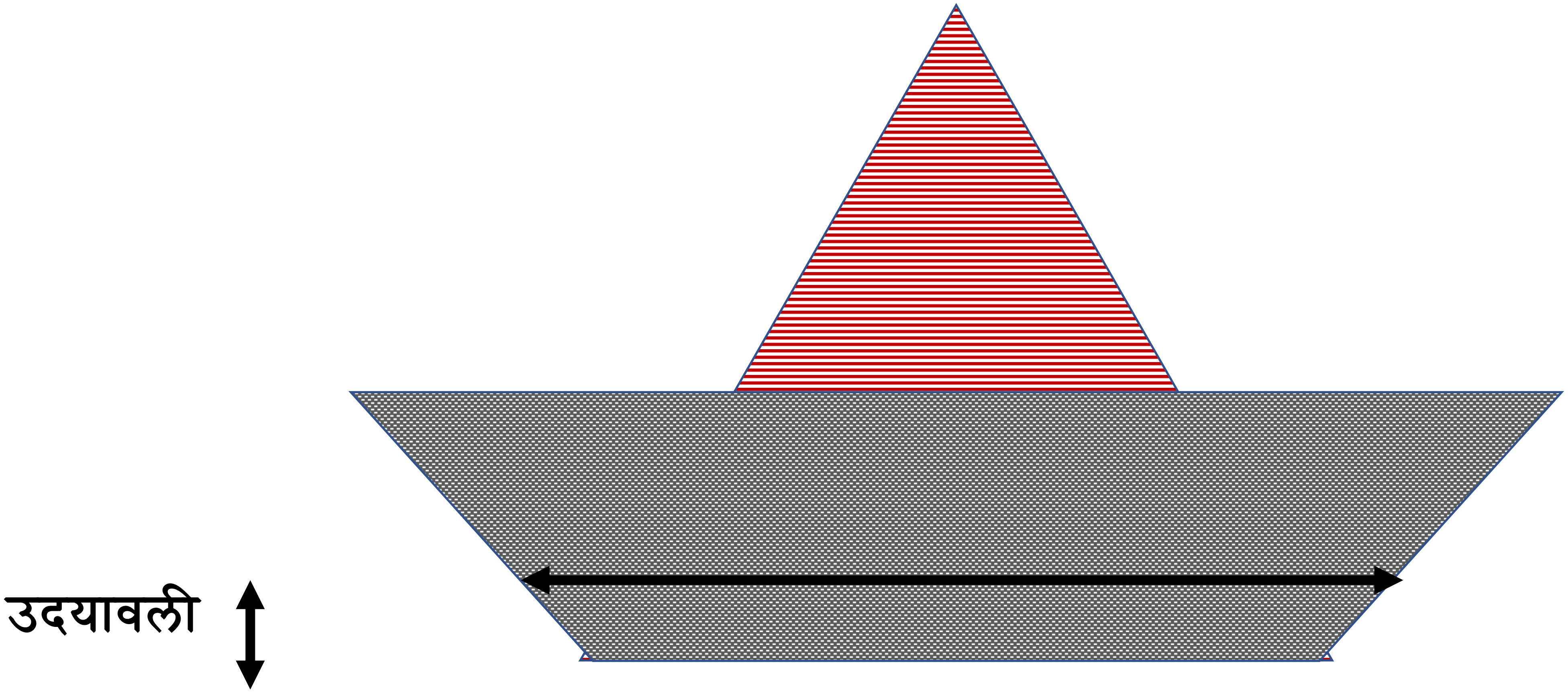

विशेष

गुणश्रेणी निक्षेपण के लिए जो अपकृष्ट द्रव्य है वह 3 स्थानों पर निक्षिप्त किया जाता है-

उदयावली, गुणश्रेणी, उपरितन स्थिति

अनुदय प्रकृति का द्रव्य उदयावली को छोड़कर शेष 2 स्थानों में ही दिया जाता है ।

गुणश्रेणी करने के लिए अपकृष्ट द्रव्य को देने योग्य स्थिति के आयाम को गुणश्रेणि-आयाम कहते है।

यहाँ गुणश्रेणी का आयाम (दीर्घता) अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण काल से कुछ अधिक है।

अपूर्वकरणकाल + अनिवृत्तिकरणकाल + अधिक काल = गुणश्रेणी-आयाम

अधिक का प्रमाण अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवाँ भागमात्र है।

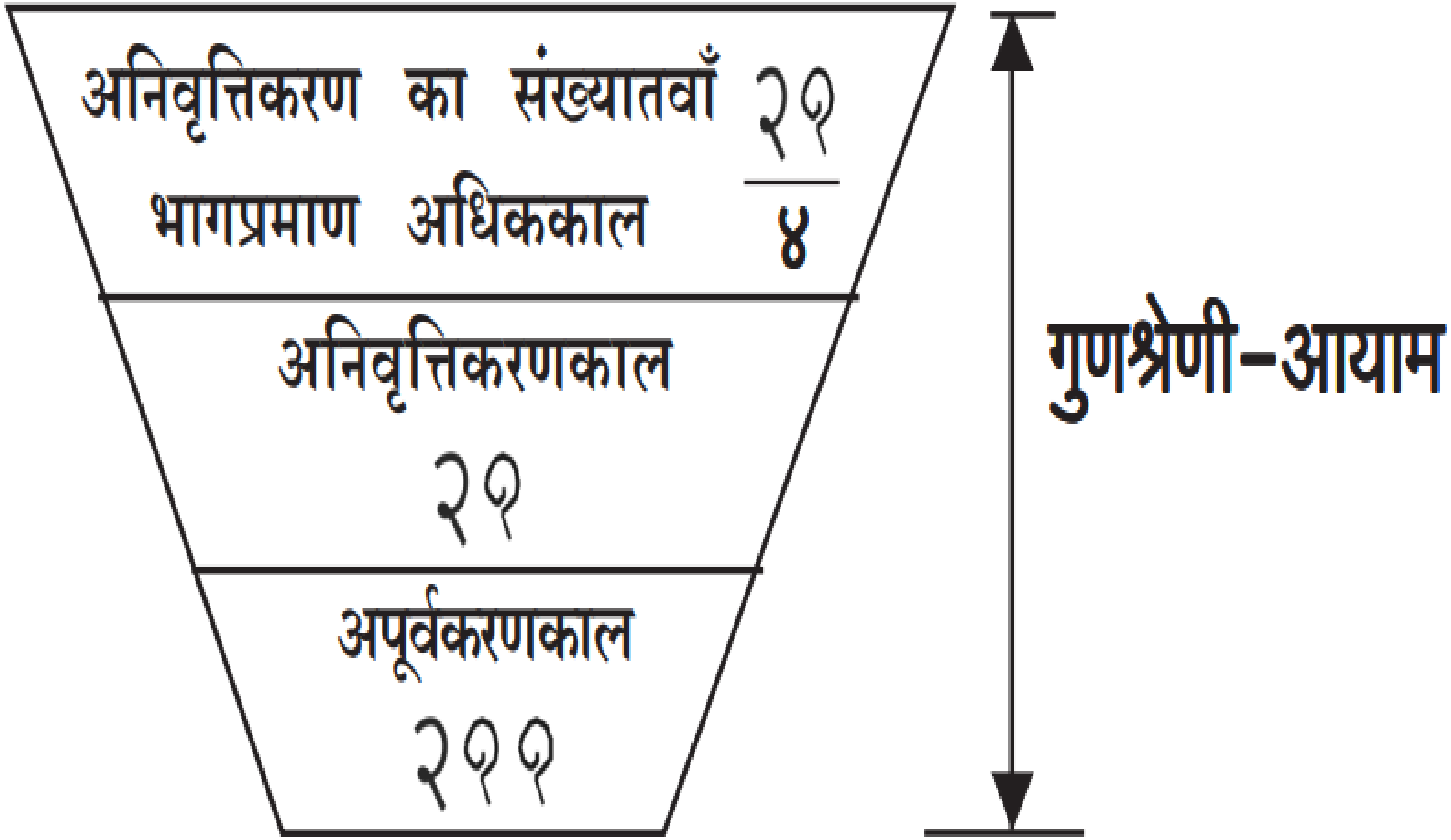
अनिवृत्तिकरण का संख्यातवाँ भागप्रमाण अधिककाल
२१/४
अनिवृत्तिकरणकाल
२१
अपूर्वकरणकाल
२११
गुणश्रेणी–आयाम

गुणश्रेणि-निक्षेप

प्रथम समय से दूसरे समय में, दूसरे समय से तीसरे समय में

इसप्रकार उत्तरोत्तर गुणश्रेणि-निक्षेप का जितना काल है

उसके प्रत्येक समय में निर्जरा के लिए उत्तरोत्तर विवक्षित निषेकों में अपकर्षित द्रव्य का देना गुणश्रेणि-निक्षेप कहलाता है ।

यह गुणश्रेणि निक्षेप गलितावशेष और अवस्थित के भेद से दो प्रकार का होता है।

निक्षेपण

- अपकर्षण अथवा उत्कर्षण किए हुए द्रव्य को जिन निषेकों में दिया जाता है उन निषेकों को निक्षेपणरूप जानना चाहिए।

अतिस्थापना

- जिन निषेकों में उत्कर्षित अथवा अपकर्षित द्रव्य नहीं दिया जाता है, उनको अतिस्थापनारूप जानना चाहिए।

अपकर्षण

- स्थिति कम करके ऊपर के निषेकों का द्रव्य नीचे के निषेकों में देना अपकर्षण कहलाता है।

उत्कर्षण

- स्थिति बढ़ाने के लिए नीचे के निषेकों का द्रव्य ऊपर के निषेकों मे देना उत्कर्षण कहलाता है ।

विशेष

उदयावलि के बाहर प्रथम समय से गलितावशेष गुणश्रेणिआयाम में अपकर्षण किए हुए द्रव्य का निक्षेपण होता है ।

आयुकर्म का गुणश्रेणि-निक्षेप नहीं होता, शेष सब कर्मों का होता है।

उसमें भी जिन प्रकृतियों का वर्तमान में उदय होता है उनका उदय-समय से लेकर निक्षेप होता है और जिन प्रकृतियों का वर्तमान में उदय नहीं होता उनका उदयावलि के उपरिम समय से निक्षेप होता है

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं प्लेलिस्ट चुनें ।